विवाह संस्कार पद्धति
युग निर्माण योजना, मथुरा

विवाह संस्कार पद्धति

सम्पादक—

श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक—

अखण्ड ज्योति संस्थान,

मथुरा

प्रथम बार] १९६५ [मू० ५० पैसा

ज्ञातव्य

विवाह के लिये गोधूलि वेला सर्वोत्तम है। सूर्य अस्त होने से लेकर एक दो घंटे रात्रि गये तक यह कृत्य हो तो मुहूर्त की दृष्टि से सर्वोत्तम है। कोई लग्न आदि का विघ्न हो तो वह इस शुभ मुहूर्त में स्वयं समाप्त हो जाता है।

मंडप बहुत सुन्दर सजाया जाय। हवन वेदी सुरुचिपूर्ण एवं कलात्मक बने। संस्कार देखने के लिये अधिक नर नारियों को बुलाया जाय। सबके बैठने की ऐसी व्यवस्था हो कि दो-तीन घंटे सब लोग शांतिपूर्वक बैठे रह सकें।

आचार्य विवाह की हर क्रिया कृत्य का तात्पर्य उपस्थित लोगों को समझाते चलें। विशेषतया वर वधू की प्रतिज्ञाओं को विस्तार-पूर्वक उपस्थित नर नारियों को समझाया जाय ताकि वे भी अपने दम्पति कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को समझते हुए निबाहने की चेष्टा करें। वर वधू से स्पष्ट शब्दों में उन प्रतिज्ञाओं को स्वीकृत कराया जाय, तब विवाह कार्य सम्पन्न हो।

विवाह-संस्कार पद्धति

विवाह आरम्भ करते हुए वर जब मंडप में प्रवेश करे तब निम्न मंगल वचन का उच्चारण करे।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष-भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देव-हितं यदायुः॥

इसके पश्चात् वर-कन्या के अभिभावक तथा वर जो भी विवाह कार्य में भाग ले रहे हों वे सब (१) पवित्रीकरण, (२) आचमन, (३) शिखा बन्धन, (४) प्राणायाम, (५) न्यास, (६) पृथ्वी पूजन, यह षट्-कर्म करें।

❀ पवित्रीकरण ❀

इस मन्त्र से हाथ में जल लेकर मस्तक तथा शिर पर छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपिऽवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि॥

❀ आचमन ❀

निम्नलिखित मन्त्रों से तीन बार आचमन करे।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा॥ १॥
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा॥ २॥
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा॥३॥

❀ शिखा-बन्धन ❀

निम्न मन्त्र पढ़कर शिखा में गाँठ लगावें।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धि कुरुष्व मे॥

❀ प्राणायाम मन्त्र ❀

निम्न मन्त्र पढ़ कर कम से कम एक बार प्राणायाम करें ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॥

❀ न्यासः ❀

तत्पश्चात् बांये हाथ की हथेली में थोड़ा-सा जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से, निम्न मन्त्रों द्वारा शरीर के अलग-अलग अंगों का स्पर्श कीजिये और साथ ही यह भावना कीजिये कि मेरे ये सब अङ्ग-प्रत्यङ्ग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजस्वी हो रहे हैं ।

ॐ वाङ्मे् आस्येऽस्तु । मुख को ।

ॐ नसोर्मेप्राणोऽस्तु । नासिका के दोनों छिद्रों को ।

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । दोनों नेत्रों को ।

ॐ कर्णयोर्मे श्रोतृमस्तु । दोनों कानों को ।

ॐ बाह्वर्मे बलमस्तु । दोनों बाहों को ।

ॐ ऊर्वोर्मेऽओजोस्तु । दोनों जंघाओं को ।

ॐ अरिष्टानिमेऽङ्गानि मनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।

इससे सब शरीर पर जल छिड़कें ।

❀ पृथ्वी पूजनम् ❀

निम्न मन्त्र पढ़ कर पृथ्वी पर जल, अक्षत, पुष्प छोड़ें—

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ॥

वर सत्कार स्वागत

वर पक्ष के व्यक्ति वर को कन्या के घर ले जावें। जिस समय वर द्वार पर पहुँचे तब वधू पक्ष के लोग अक्षत, रोली, पुष्प आदि भेंट करते हुए उसका स्वागत करें और निम्न वाक्य बोलें।

"साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम् ॥"

कन्या पक्ष की ओर से स्वागत में दिये गये पदार्थ एवं स्वागत सत्कार को ग्रहण करते हुए वर निम्न शब्द कहे।

'ॐ अर्चय ॥"

❀ विष्टर समर्पण ❀

विष्टर आसन को कहते हैं। अक्सर आसन पहले से ही मण्डप में बिछा होता है। लेकिन शिष्टाचार की परम्पराओं का पालन करते हुए अन्य आसन जिसे पूर्व आसन पर बिछाया जा सके या आसन का प्रतीक जैसे कलावा लपेटी हुई कुशायें वर को आसन के रूप में प्रदान की जाती हैं।

जिस आसन पर वर को बैठना है उसकी ओर संकेत करते हुए, हाथ में विष्टर लेकर आचार्य तथा कन्या का पिता निम्न मन्त्र बोले।

ॐ विष्टरो, विष्टरो, विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ।

"आप यह उत्तम आसन ग्रहण कीजिये।"

इस पर वर उत्तर दे।

"ॐ प्रतिग्रह्णामि।"

ऐसा कहकर वर कन्या के पिता हाथ से विष्टर लेकर उसे आसन पर बिछाकर बैठ जाय और निम्न मन्त्र बोले।

ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिधासति ॥

❀ पाद्यम् ❀

आये हुए अतिथि अथवा मेहमान के पैर धोने के लिए जल पात्र सौंपना भारतीय शिष्टाचार का आवश्यक अङ्ग है। इसलिये वर को पाद्य-पात्र देते हैं।

लड़की का पिता या संरक्षक एक पात्र में जल भर कर निम्न मन्त्र बोलता हुआ वर को दे।

ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

'ॐ प्रतिग्रह्णामि"

ऐसा कह कर वर जलपात्र को ले ले और उससे पद प्रक्षालन करले। इस अवसर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे।

ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥

❀ अर्घ्यं ❀

पैर धोने के पश्चात् दूसरा शुद्ध जल का पात्र मुँह धोने के लिये दिया जाता है। क्योंकि पैर धोने से पहला पात्र अपवित्र हो जाता है।

कन्या पक्ष वाले लोग पुनः दूसरा जलपात्र भर कर वर की ओर बढ़ाते हुए इस प्रकार कहें।

ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रतिगृह्यताम् ॥

वर जलपात्र को ग्रहण करता हुआ निम्न वाक्य कहे।

ॐ प्रतिगृह्णामि ॥

जल पात्र को हाथ में लेकर वर मुख प्रक्षालन करे। मुँह धोने के पश्चात् वह निम्न मन्त्र कहे।

ॐ आपस्थ युस्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि।
ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत।
अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः ॥

* आचमन *

हाथ पैर मुँह आदि धोकर आचमन के लिये अर्थात् कुल्ले आदि के लिये दूसरा शुद्ध जल का पात्र देना चाहिए।

तत्पश्चात् वर अपने आसन पर पुनः बैठ जाय। इसके अनन्तर कन्या पक्ष के लोग एक छोटे से पात्र में शुद्ध जल भर के उसमें एक आचमनी रखकर वर की ओर आगे बढ़ावें तथा निम्न मन्त्र बोलें।

ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्प्रतिगृह्यताम् ॥

"ॐ प्रतिगृह्णामि"

ऐसा कहकर वर आचमन पात्र को अपने हाथ में लेकर निम्न मंत्र तीन बार बोलता हुआ क्रमशः तीन बार आचमन करे।

ॐ आमागन् यशसा सँ सृज वर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥

तीन बार आचमन, मन, वाणी और हृदय की शुद्धि के लिए किया जाता है। इन तीनों की शुद्धि होने पर ही आंतरिक पवित्रता की आवश्यकता पूर्ण होती है।

* मधुपर्क *

भारतीय परम्परा के अनुसार अतिथि अथवा मेहमान के भोजन के लिये मधुपर्क को सर्वश्रेष्ठ पदार्थ माना गया है और वास्तव में यह उपयोगी स्वास्थ्य वर्धक, स्वादिष्ट और मधुर होता है। अस्तु वर के लिए भी मधुपर्क का भोजन दिया जाता है।

कन्या पक्ष वाले मधुपर्क का पात्र लेकर वर की ओर निम्न मंत्र बोलते हुए बढ़ावें। (मधुपर्क में दही तीन भाग, घृत और शर्करा एक-एक भाग मिलाया जाता है। इन तीनों के मिश्रण को मधुपर्क कहते हैं।)

ॐ मधुपर्को, मधुपर्को, मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम् ॥

"ॐ प्रतिगृह्णामि"

ऐसा कहते हुए वर पात्र को निम्न मन्त्र कहता हुआ अपने हाथ में ले ले और उसे देखे।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् प्रतिगृह्णामि ॥

निम्न मन्त्र बोलते हुए वर मधुपर्क का पान करे।

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमᳬ रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्यो-ऽन्नादोऽसानि।'

* गौदान *

गाय देवत्व, पवित्रता, सात्विकता सरलता एवं परमार्थ का सर्वोत्कृष्ट जीवित प्रतीक है। पशु होते हुए भी इसमें उक्त विशेषतायें अन्य प्राणियों से अधिक होती हैं। इसलिये विवाह जैसे पुण्य कार्यक्रम

का प्रारम्भ करने से पूर्व वर के लिये गौदान का शुभ कृत्य किया जाता है।

कन्या पक्ष की ओर से वर को गाय अथवा उसके स्थान पर प्रतीक रूप में गौ-द्रव्य प्रदान किये जायें, निम्न मंत्र कहते हुए।

ॐ गौगौंगौं: प्रतिगृह्यताम् ।।

वर कहे—

ॐ प्रतिगृह्णामि ।

माता की तरह गाय भी मनुष्य की हितकारी होती है। उसे माँ की तरह मानते हुए वर सम्मान पूर्वक ग्रहण करे।

वर, गौ की प्रशंसा और महत्ता का बोधक निम्न मन्त्र बोले।

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽदित्यानाममृतास्यनाभि: ।। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिवधिष्ट ।।

॥ आचार्य वरण ॥

निम्न मंत्र बोलते हुए आचार्य के दांये हाथ में कलावा बाँधें।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

॥ आचार्य तिलक ॥

निम्न मंत्र बोलते हुए आचार्य के तिलक करे।

ॐ गन्धद्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

॥ वर वरण ॥

निम्न मंत्र से वर के हाथ में कलावा बाँधे।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।
शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्यै॥

॥ यज्ञोपवीत धारण ॥

निम्न मंत्र बोल कर नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

निम्न मंत्र पाठ करते हुए पुराना यज्ञोपवीत गले से होकर निकालना चाहिये।

ॐ एतावदिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

॥ कन्या वरण ॥

कन्या को वेदी पर बुलाया जाय और उसे वर के दायीं ओर पूर्व निश्चित स्थान पर बैठा देना चाहिए।

आचार्य कन्या के दाहिने हाथ में निम्न मन्त्र बोलता हुआ तीन बार घुमाकर कलावा बाँधे।

ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवा कृष्टीनामभिशस्तिपावा।

शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वा-
युष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥

॥ कलश पूजन ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृतः ॥१॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदो सामवेदोह्यथर्वणः ॥२॥
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रितः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी सदा ॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥४॥
आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवा सपैतृका ।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥५॥
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः ।
सान्निध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥६॥

॥ देव पूजनम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुर्विष्णुः गुरुरेव महेश्वरः ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः ॥१॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवेनमः ॥२॥
आयातु वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनी ।

गायत्रिच्छन्दसां माता ब्रह्मयोनिर्नमोस्तुते ॥३॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥४॥
सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यंम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥५॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥६॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थोभगवान्मंगलायतनो हरिः ॥७॥
विनायकं गुरुः भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ शांतिकार्यार्थसिद्धये ॥८॥
मंगलं भगवान् विष्णु मंगलं गरुड़ध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥९॥
त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सत्यलोक पितामहः।
आगच्छ मंडले चास्मिन्मम सर्वार्थसिद्धये ॥१०॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगभिर्ध्यानिगम्यं।
वंदे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥११॥
वंदे देवमुमापति सुरगुरं वंदे जगत्कारणम्।
वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशूनाम्पतिम्॥

वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनम् वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।१२।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।१३।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि
दारिद्रय्दुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ।।१४।।
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम् ।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक मालिकाम विदधतीं पद्मासने संस्थितम् ।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।१६।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यांहिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१६।।
कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम् ।
कल्याणजननी नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ।।१७।।
विष्णुपादाब्जसम्भूते गंगे त्रिपथगामिनि ।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि ।।१८।।
पुष्करद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदामम ।।१९।।
ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रा शनिराहुकेतवः सर्वग्रहाःशांतिकरा भवंतु ।
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजयाजया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोक मातरः ॥२०॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता ।
गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौ पूज्याश्चषोडश ॥२२॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञासरस्वती ।
मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैता दिव्यमातरः ॥२३॥
नागपृष्ठसमारूढ़ं शूल हस्तं महाबलम् ।
पातालनायकं देवं वासुदेवं नमाम्यहम् ॥२४॥
क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्टनिवारकान् ।
अस्य यागस्यसिध्यर्थं पूजयाराधितान् मया ॥२५॥
ॐ सिद्धि बुद्धि सहित श्रीमन्महागणाधिपतयेनमः ।
ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यान्नमः ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यान्नमः ।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यान्नमः ।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यान्नमः ।
ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः ।
ॐ कुलदेवताभ्योनमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ।
ॐ ग्राम्यदेवताभ्यो नमः । ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः ।
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः ।
ॐ एतत्कर्मप्रधान श्री गायत्री देव्यै नमः । ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

॥ षोडशोपचार पूजन ॥

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः - आवाहयामि स्थापयामि।१।
आसनं समर्पयामि ॥२॥ पाद्यं समर्पयामि ।३।
अर्घ्यं समर्पयामि ।४। आचमनम् समर्पयामि ।५।
स्नानम् समर्पयामि ।६। वस्त्रम् समर्पयामि ।७।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।८। गन्धम् समर्पयामि ।९।
पुष्पाणिसमर्पयामि ।१०। धूपम् समर्पयामि ।११।
दीपम् समर्पयामि ।१२। नैवेद्यं समर्पयामि ।१३।
अक्षतान् समर्पयामि ।१४। ताम्बूलपुंगीफलानि समर्पयामि ।१५। दक्षिणां समर्पयामि ।१६।
सर्वाभावे अक्षतान समर्पयामि ।१७।
ततो नमस्कारं, करोमि ।

नमः सर्व हितार्थाय जगदाधार हेतवे ।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मयाकृतः ।
नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि शिरोरुवाहवे ।
सहस्र नाम्नेपुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणेनमः॥

॥ चन्दन लगाने का मन्त्र ॥

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदा हरते नित्यं लक्ष्मी तिष्ठिति सर्वदा ॥

॥ स्वस्ति-वाचनम् ॥

हाथ में जल, पुष्प, अक्षत लेकर स्वस्ति-वाचन बोला जाय। यह शुभ कार्यों की सफलता, शान्ति, सार्थकता एवं मंगलमय कार्यों के समय कल्याणकारक मन्त्र है।

ॐ गणानांत्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम आहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥१॥

ॐ स्वास्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।२

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षं पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥३॥

ॐ विष्णोः रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थोः विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रु वोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।४।

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥५॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति-रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥६॥

ॐ विश्वानिदेव सवितुर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥ ७ ॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।
सर्वारिष्टः सुशान्तिर्भवतु ॥

॥ प्रदक्षिणा ॥

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः अग्नेय्यां गरुडध्वजः ।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैऋत्यां मधुसूदनः ॥ १
पश्चिमे चैव गोविंदो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्रीपती रक्षे दैशान्यां हि महेश्वरः ॥ २
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु ।
अनुक्तमपि यत् स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ॥ ३
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥ ४
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे ॥ ५

※ मङ्गलाष्टकम् ※

आचार्य एवं उपस्थित विद्वज्जन निम्नलिखित मङ्गलाष्टक एवं शाखोच्चार का उच्च स्वर से गान करें ।

श्रीमत्पंकजविष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनल-
श्चन्द्रो भास्करवित्तपालवरुणप्रेताधिपादिग्रहाः ।
प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः
स्वामी शक्तिधरश्च लांगुलधरः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१

गङ्गा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविन्दगोवर्धनौ
गीतागोमयगौरजो गिरिसुता गंगाधरो गौतमः ।
गायत्री गरुडो गदाधरगया गम्भीरगोदावरी
गान्धर्वग्रहगोपगोकुलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ २

नेत्राणां त्रितयं महत्पशुपतेरग्नेस्तु पादत्रयं
तत्तद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम् ।
गंगाबाहुपथत्रयं सुविमलं वेदत्रयं ब्राह्मणम्
सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैरभिमतं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ ३

वाल्मीकिः सनकः सनन्दनमुनिर्व्यासो वसिष्ठो भृगु-
र्जाबालिर्जमदग्निजह्नुजनको गर्गो गिरा गौतमः ।
मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नलः
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषौ कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ ४

गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा कण्डूसुपर्णाशिवाः
सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्यव्रतारुन्धती ।

स्वाहा जाम्बुवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी
वेला चाम्बुनिधेः समीनमकरा कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ ५
गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी
पुण्याः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥६
लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा
गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगनाः ।
अश्वः सप्तसुखः सुधा हरिधनुः शंखं विषं चाम्बुजे
रत्नानीति चतुर्दशं प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ ७
ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणां पतिः
शुक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः ।
विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिस्तारापतिश्चन्द्रमा
इत्येते पतयस्सुपर्ण सहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

❋ विवाह-घोषणा ❋

स्वस्ति श्रीमतः सत्प्रतिष्ठा गरिष्ठस्य...गोत्रोद्भवस्य स्यामं पुत्रो...वर श्चिरञ्जीवी, सफल जीवनः सद्धर्म रक्षकः, समाजसेवा परायणश्च भवतात् ॥

स्वस्ति श्रीमतः चरित्राचारसमन्वितस्य...गोत्रोत्पन्न-स्यस्येयं पुत्री....नाम्नी चिरंजीविनो गार्हस्थ्य कुलमर्यादा पालिका, धर्म परायणा, संयम शालिनी च भवताज् ॥

❀ वर द्वारा वस्त्र प्रदान ❀

वर की ओर से वधू को दुपट्टा वस्त्र दिया जाता है, जिसे वह इस मन्त्र के साथ धारण करे।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि ।
शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥

❀ वर की प्रतिज्ञाएँ ❀

पाणिग्रहण और ग्रन्थि-बन्धन हो जाने पर दोनों आत्माऐं एक सूत्र में बँधती हैं। तब उन्हें अपने कर्त्तव्य, धर्म को भी समझना चाहिये और निष्ठापूर्वक उसका पालन भी करना चाहिये। जीवन की जिम्मेदारी वर के ऊपर है। इसलिए वधू कन्या को स्वीकार करते समय उसे निम्न प्रतिज्ञायें भी करनी चाहिये।

धर्मपत्नी मिलित्वैव ह्येकं जीवन भावयोः ।
अद्यारम्भ यतो मे त्व मर्द्धाङ्गिनीति घोषिता ॥ १

हे धर्मपत्नि ! आज से हम दोनों का जीवन संयुक्त होकर एकत्व का हो गया है। अतः तुम मेरी "अर्धाङ्गिना" हो इस प्रकार घोषित की जाती हो ॥ १ ॥

स्वीकरोमि सुखेन त्वां गृह लक्ष्मीमहन्ततः ।
मन्त्रयित्वा विधास्यामि सुकार्याणि त्वया सह ॥ २

मैं तुम्हें गृहलक्ष्मी के रूप में सहर्ष स्वीकार करता हूँ। तुम्हारे साथ मन्त्रणा कर अच्छे कार्य करूँगा ॥ २ ॥

रूप स्वास्थ्य स्वभावान्तु गुणदोषादीन् सर्वतः ।
रोगाऽज्ञान विकाराश्च तव विस्मृत्य चेतसः ॥ ३
सहचरो भविष्यामि पूर्णं स्नेहं प्रदाय ते ।
सत्यता मम निष्ठा च यस्याऽधभारं विष्यति ॥ ४

तुम्हारे रूप, स्वास्थ्य, स्वभाव, गुण, दोष एवं अन्य रोग, अज्ञान विकारों को चित्त से भूलकर, समस्त स्नेह को प्रदान कर तुम्हारा सहचर बनूँगा जिस प्रेम का आधार मेरी सत्यता और निष्ठा होंगे ।।३—४।।

यथा पवित्र चित्तेन पातिव्रत्यं त्वया धृतम् ।
तथैव पालयिष्यामि पत्नीव्रतमहं ध्रुवम् ।। ५

जिस प्रकार तुम्हारे द्वारा पवित्र चित्त से पतिव्रत धर्म धारण किया गया है,वूप उसी प्रकार मैं भी निश्चयक पत्नीव्रत का पालन करूँगा ।

गृहस्यार्थ व्यवस्थायां मन्त्रायित्वा त्वयासह ।
संचालनं करिष्यामि गृहस्थो चित् जीवनम् ।। ६

घर की अर्थ व्यवस्था में तुम्हारे साथ मन्त्रणा कर गृहस्थोचित जीवन को संचालित करूँगा ।। ६ ।।

समृद्धि सुख शान्तीनां रक्षणाय तथा तव ।
व्यवस्थां संकरिष्यामि स्वशक्तिवैभवादिभिः ।। ७

तुम्हारी सुख, शान्ति समृद्धि तथा रक्षा के लिए अपने शक्ति और वैभव आदि से सम्यक्रूप से व्यवस्था करूँगा ।।७।।

यत्नशीलो भविष्यामि सन्मार्गं सेवितुं सदा ।
आवयोः मतभेदांश्च दोषान्संशोध्य शान्तितः ।। ८

अपने और तुम्हारे मतभेदों तथा दोषों को शान्तिपूर्वक समाधान कर सदैव सन्मार्ग के सेवन हेतु प्रयत्नशील बनूँगा ।।८।।

देवाऽग्नि सन्मनुष्याणां सान्निध्ये कृत निश्चयः ।
त्वां प्रत्यऽहं भविष्यामि सहिष्णुः मृदुलस्तथा ।। ९

देवता, अग्नि एवं सत्पुरुषों के समक्ष कृतनिश्चय होकर (प्रतिज्ञा करता हूँ) कि तुम्हारे प्रति मैं सहिष्णु एवं मृदुल बनूँगा ।। ९ ।।

भवत्यामसमर्थायां विमुखायाञ्च कर्मणि ।
विश्वासं सहयोगञ्च मम प्राप्यस्यसि त्वं सदा ॥ १०
मधुराँ प्रेम संयुक्तां वार्तां सत्यव्यवहृतिम् ।
दृढंपत्नीव्रतमेकं वचो मे तव सन्निधौ ॥ ११

तुम्हारे असमर्थ होने एवं कर्तव्य विमुख होने पर तुम मेरा विश्वास, सहयोग, प्रेमयुक्त मधुर वार्ता, सत्य व्यवहार एवं एक दृढ़ पत्नीव्रत को सदैव प्राप्त करती रहोगी यह तुम्हारे समक्ष मेरा वचन है ॥ १०-११ ॥

※ कन्या की प्रतिज्ञाएँ ※

वामाङ्गगमनात्पूर्वं कन्या सौभाग्य काङ्क्षिणी ।
विदधाति प्रतिज्ञाः स्वा भर्त्तारं प्रति श्रद्धया ॥ १

विवाह के समय वामाङ्ग में जाकर बैठने के पूर्व अपने सौभाग्य की अभिलाषा रखने वाली कन्या भावी स्वामी के प्रति श्रद्धापूर्वक अपनी प्रतिज्ञाएँ करती है ॥ १ ॥

स्वजीवनं मेलयित्वा भवतः खलु जीवने ।
भूत्वा चार्धांगिनी नित्यं वसिष्यामि गृहे सदा ॥ २

अपने जीवन को आपके जीवन के साथ घुला-मिला कर सर्वदा अर्धाङ्गिनी पत्नी के स्वरूप में रहकर घर में रहूँगी ॥२॥

शिष्टतापूर्वकं सर्वैः परिवार जनैः सह ।
औदार्येण विधास्यामि व्यवहारं च कोमलम् ॥ ३

परिवार के समस्त मनुष्यों के साथ शिष्टतापूर्वक उदारता की भावना रखकर कोमल व्यवहार करूँगी ॥ ३ ॥

त्यक्त्वालस्यं करिष्यामि गृहकार्ये परिश्रमम् ।
भर्त्तुर्हर्षं हि ज्ञास्यामि स्वीयामेव प्रसन्नताम् ॥ ४

आलस्य को त्याग कर घर के कार्यों में खूब परिश्रम करूँगी और स्वामी की प्रसन्नता को ही अपनी प्रसन्नता समझूँगी ॥ ४ ॥

श्रद्धया पालयिष्यामि धर्मं पातिव्रतं परम् ।
सर्वत्रैवानुकूल्येन पत्युरादेश पालिका ॥ ५

श्रद्धा-भक्ति के साथ पतिव्रत के परम धर्म का पालन करूँगी और सर्वत्र पूर्ण अनुकूलता रखते हुए पति की आज्ञा का पालन करने वाली बनूँगी ॥ ५ ॥

सुश्रूषणपरा स्वच्छा मधुर-प्रियभाषिणी ।
प्रतिजाने भविष्यामि सततं सुखदायिनी ॥ ६

सर्वदा सेवा में तत्पर, स्वच्छता रखने वाली और प्रिय तथा मधुर भाषण करने वाली एवं सदा सुख देने वाली बनूँगी, यह मैं प्रतिज्ञा करती हूँ ॥ ६ ॥

मितव्ययेन गार्हस्थ्य सञ्चालने हि नित्यदा ।
प्रयतिष्ये च सोत्साहं तवाह मनुगामिनी ॥ ७

मितव्यय पूर्वक गृहस्थी के कार्यों का सञ्चाल करने का उत्साह के साथ प्रयत्न करूँगी और आपकी हमेशा अनुगामिनी रहूँगी ॥ ७ ॥

देव स्वरूपो नारीणां भर्त्ता भवति मानवः ।
मत्वेति त्वां भजिष्यामि नियता जीवनावधिम् ॥ ८

इस संसार में पुरुष नारियों के लिए साक्षात् देवता के स्वरूप वाला होता है—यह मानकर नियत मन से पूरे जीवन में आपकी सेवा करूँगी ॥ ८ ॥

पूज्यास्तव पितरो ये श्रद्धेयाः परमा हि मे ।
सेवया त्वोषयिष्यामि तान्सदा विनयेन च ॥ ९

जो माता-पिता आदि आपके पूज्य हैं वे मेरे लिए अत्यन्त ही श्रद्धा करने के योग्य हैं। मैं उन्हें सेवा और नम्र व्यवहार से पूर्ण सन्तोष दूँगी ॥ ९ ॥

कदापि क्वापि किमपि करिष्ये न पराङ्मुखी ।
प्रति जानामि मम च त्वमेव सर्वमेव हि ॥ १०

किसी भी समय और किसी भी स्थान तथा अवसर पर आप से विमुख होकर कुछ भी कार्य नहीं करूँगी—ऐसी मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे लिए आप ही सब कुछ हैं ॥ १० ॥

❀ कन्यादान-संकल्प ❀

लड़की का पिता या अभिभावक अपनी पत्नी सहित पूजा वेदी पर आये। पत्नी को दाहिनी ओर बैठाये तथा दोनों वर के उत्तराभिमुख बैठे। तत्पश्चात् आचमनादि पञ्चकर्म करके सन्ध्या करें। इसके पश्चात् वर और कन्या के हाथों में हल्दी का लेपन करें। अर्थात् पीले हाथ करें। तत्पश्चात् निम्न प्रकार से कन्यादान का विधिपूर्वक संकल्प करें। संकल्प के लिये दोनों स्त्री-पुरुष दाँये हाथ में चावल, जल, पुष्प आदि लें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे

श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलौ कलियुगे प्रथम चरणे भूलोके जम्बूद्वीपान्तर्गते भरतखण्डे मासानां मासोत्तमे ....मासे...... पक्षे......तिथौ......वासरे सुस्नाताया गन्धाद्यर्चिताया वस्त्रयुगच्छन्नाया यथाशक्तचलङ्कृतायाः प्रजापतिदैवत्याया.........नाम्न्या अस्याः कन्यायाः शतगुणीकृत-ज्योतिष्टोमातिरात्रशतफल प्राप्तिकामः विष्णुरूपिणे वराय......भरणपोषणाच्छादनपालनादीनां स्वकीयोत्तरदायित्वभारमखिलमद्य तव पत्नीत्वेन तुभ्यमहं प्रददे ।

❋ पाणिग्रहण ❋

कन्या को वर के लिए समर्पित करने सौंपने के उद्देश्य से उसके अभिभावक उसका हाथ पकड़कर वर के हाथ में सौंपते हैं। इसके अतिरिक्त पाणि-ग्रहण वर-वधू के मिलने का प्रतीक कार्यक्रम है। प्रायः विश्व की अधिकांश विवाह प्रणालियों में हस्त-मिलाप विवाह का आवश्यक कृत्य माना जाता।

संकल्प पूरा हो जाने पर यजमान—लड़की के माता-पिता वर के हाथ में अपने हाथ के जल, अक्षत पुष्प आदि छोड़ दें। इसी अवसर पर अभिभावक कन्या का हाथ पकड़कर वर की ओर बढ़ावें।

हस्त ग्रहण करते समय निम्न मन्त्र बोला जाय।

ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा ।
हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु असौ ॥

✽ ग्रन्थि-बन्धन ✽

ग्रन्थि बन्धन से तात्पर्य यह कि दोनों सदैव एक सूत्र में बँधकर, एक होकर जीवन-पथ पर आगे बढ़ेंगे। अलग-अलग या अपने-अपने स्वार्थों, लाभ आदि को महत्व न देकर दोनों के सामूहिक हितों के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न करेंगे। दोनों एक गाँठ से बँधे हुए अलग-अलग जीवन होकर भी एक रहेंगे। इसी शिक्षा के लिए ग्रन्थि-बन्धन की क्रिया की जाती है।

कन्या पक्ष की ओर से कोई भी कन्या का निकटस्थ सम्बन्धी निम्न मन्त्र बोलते हुए ग्रन्थिबन्धन करे। इसके लिए कन्या की ओढ़नी के छोर में पुष्प अक्षतादि रखकर वर के वस्त्र के छोर से बांध दें।

ॐ समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयादि नौ।
संमातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ॥

॥ अग्नि स्थापनम् ॥

किसी पात्र या चमचों में अग्नि रख कर या कपूर जलाकर नीचे लिखे हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए श्रद्धा और भक्ति के साथ हवनकुन्ड में अग्नि स्थापन करें—

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवांऽ-आसादयादिह। ॐअग्नये नमः। ॐ अग्निं आवाहयामि स्थापयामि। इहागच्छ इह तिष्ठ। इत्यावाह्य पंचोप-चारैः पूजयेत्।

॥ अग्नि प्रदीपनम् ॥

तत्पश्चात् अग्नि पर छोटे-छोटे काष्ठ और कपूर धरकर निम्न मन्त्र पढ़कर व्यजन (पङ्खा) से अग्नि को प्रदीप्त करे—

ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते सᳬं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

॥ समिधाधानम् ॥

निम्न चार मन्त्रों से आठ-आठ अंगुल की पलाशादि की चार समिधाएँ प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के बाद क्रम से घी में डुबोकर अग्नि में डालें—

(१) ॐ अयंत इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन समेधय, स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम॥

(२) ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् अस्मिन् हव्या जुहोतन, स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

(३) ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।

(४) ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम

॥ जलप्रसेचनम् ॥

तत्पश्चात् अञ्जलि (आचमन) से जल लेकर कुण्ड

(वेदी) के पूर्व दिशा आदि में चारों ओर छिड़कावें। इसके मन्त्र ये हैं—

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व ॥ इति पूर्वे

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इति पश्चिमे

ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इति उत्तरे

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु।

इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड (वेदी) के चारों ओर जल छिड़कावें।

॥ आज्याहुति होमः ॥

बड़े हवनों में सभी आवाहित एवं प्रतिष्ठापित देवताओं के लिये आहुतियाँ दी जाती हैं। छोटे हवनों में सात आहुतियाँ केवल घृत की देते हैं और स्रुवा से बचा हुआ घृत 'इदन्नमम' उच्चारण के साथ प्रणीता में हर आहुति के बाद टपकाते जाते हैं। यही टपकाया हुआ घृत अन्त में अवघ्राण के काम आता है।

[१] ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।

[२] ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।

[३] ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

[४] ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।

[५] ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

[६] ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।

[७] ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।

* अथ प्रायश्चित्तहोमः *

ॐ त्वन्नोऽअग्नेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवया-सिसीष्ठाः। यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानोविश्वाद्वेषाँ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।१। ॐसत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोरुणँ रराणोवीहिमृडीकँ सुहवोनएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।२।। ॐअयाश्चाग्ने-स्यनभिशस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाअसि। अयानोयज्ञं वहा-स्ययानोधेहि भेषजँ स्वाहा। इदमग्नये न मम ।। ३ ।। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः ।। तेभिर्नोऽद्य सवितोतविष्णुविश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य स्वर्केभ्यश्च न मम ।। ४ ।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमद्धचमँ श्रथाय। अथा-वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदंवरुणायादित्ययादितये न मम ।।५।। उदकस्पर्शः।

* अथ राष्ट्रभृत होम *

ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वः सनऽइदं ब्रह्म-क्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहावाट्। इतमृताषाहे ऋतधाम्नेऽग्नये-गन्धर्वाय न मम ।। १ ।। ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्नि-र्गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनामताभ्यः स्वाहा। इद-

मौषधिभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्‌भचश्च न मम ॥ २ ॥
ॐ सँ हितो पिश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्र-
म्पातु तस्मै स्वाहावाट् । इदं सँ हिताय विश्वसाम्ने
सूर्याय गन्धर्वाय न मम ॥३॥ ॐसँ हितो विश्वसामा-
सूर्योगन्धर्वस्तस्यमरीचयोऽप्सरसऽआयुवोना मताभ्यः
स्वाहा । इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम ॥४॥
ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमागन्धर्वः सनऽइदंब्रह्मक्षत्रंपातु
तस्मै स्वाहावाट् । इदँ सुषुम्णायसूर्यरश्मयेचद्र मसे-
गन्धर्वाय न मम ॥५॥ ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चमा गंधर्व-
स्तस्यनक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नामताभ्यः स्वाहा । इदंः
नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्या भेकुरिभ्यो न मम ॥६॥ॐ इषिरोविश्व-
व्यचावातो गन्धर्वः सनऽइदंब्रह्मक्षत्रम्पातुतस्मैस्वाहावाट् ।
इदमिषिरायविश्वव्यचसेवातायगन्धर्वाय न मम ॥७॥
ॐ इषिरोविश्वव्यचावातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो-
ऽनाम ताभ्यः स्वाहा । इदमद्‌भयोऽप्सरोभ्यऊर्भ्यो न
मम ॥ ८ ॥ ॐ भुज्युः सुपर्णोयज्ञोगन्धर्वः सनऽइदंब्रह्मः
क्षत्रंपातु तस्मै स्वाहावाट् । इदं भुज्यवे सुपर्णाययज्ञाय-
गन्धर्वाय न मम ॥ ९ ॥ ॐ भुज्युः सुपर्णोयज्ञोगन्धर्व-
स्तस्यदक्षिणाअप्सरसस्तावानामताभ्यः स्वाहा । इदं
दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्ताभ्यवा न मम ॥१०॥ ॐ प्रजा-
पतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः सनऽइदंब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मै

स्वाहावाट् । इदं प्रजापतयेविश्वकर्मणेमनसेगन्धर्वाय न मम ॥ ११ ॥ ॐ प्रजापतिविश्वकर्मामनोगन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यऽप्सरसऽएष्टयोनामताभ्यः स्वाहा। इदमृक्सामभ्योऽप्सरसोभ्यएष्टिभ्यो न मम ॥ १२ ॥

॥ इति राष्ट्रभृत होमः ॥

※ अथ जयाहोमः ※

ॐ चित्तं च स्वाहा। इदं चित्ताय न मम ॥१॥
ॐ चित्तश्च स्वाहा। इदं चित्त्यै न मम ॥ २ ॥
ॐ आकूतं च स्वाहा। इदमाकूताय न मम ॥ ३ ॥
ॐ आकूतिश्च स्वाहा। इदमाकूत्यै न मम ॥ ४ ॥
ॐ विज्ञातं च स्वाहा। इदं विज्ञाताय न मम ॥ ५ ॥
ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा। इदं विज्ञात्यै न मम ॥ ६ ॥
ॐ मनश्च स्वाहा। इदं मनसे न मम ॥ ७ ॥
ॐ शक्वर्यश्च स्वाहा। इदं शक्वरीभ्यो न मम ॥ ८ ॥
ॐ दर्शश्च स्वाहा। इदं दर्शाय न मम ॥ ९ ॥
ॐ पौर्णमासश्च स्वाहा इदं पौर्णमासाय न मम ॥१०॥
ॐ बृहच्च स्वाहा। इदं बृहते न मम ॥ ११ ॥
ॐ रथन्तरञ्च स्वाहा। इदं रथन्तराय न मम ॥१२॥
ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा। इदं प्रजापतये जयानिन्द्राय न मम ॥ १३ ॥

※ अथ लाजाहोमः ※

वर और वधू अब अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जायँ। वधू को वर से कुछ आगे बढ़कर खड़े करना चाहिए। तत्पश्चात् वधू का भाई शमीपत्र मिश्रित, घृत-सिञ्चित लाजा अर्थात् खील एक थाली जैसे चौड़े पात्र में लावे और वधू की अँजली में एक-एक करके तीन बार दे। वधू लाजाओं को वर के हाथ में में दे दे। वर उन्हें निम्न तीन मन्त्रों के साथ तीन बार हवन करे।

ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत। सो नोऽर्यमा देवा प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यम्णे, अग्नये न मम ॥१॥ ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजा. नावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ॥२॥ ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव मम तुभ्यं च संवदनं तदग्निरनुमन्यतामियँ स्वाहा ॥ इदमग्नये, न मम ॥३॥

लाजाहोम के साथ वधू आगे और वर पीछे रहकर तीन परिक्रमा करें। हर परिक्रमा के पश्चात् फिर तीन बार "ॐ अर्यमण" आदि तीन मन्त्रों से लाजा हवन करें। स्मरण रहे यह लाजा हर बार वधू का भाई देता रहेगा।

लाजा की तीन आहुति के पश्चात् फिर वधू को आगे करके "तुभ्यमग्ने" मन्त्र बोलते हुये दूसरी परिक्रमा पूरी कराई जाय। तत्पश्चात् लाजा होम "ॐ अर्यमण" आदि मन्त्रों से फिर तीन बार किया जाय। इस तरह उक्त तीन परिक्रमाओं में क्रमशः नौ बार लाजा होम, तीन बार प्रदक्षिणा, तीन बार

अश्मारोहण हो जाता है। स्मरण रहे पत्थर सभी परिक्रमाओं में अपने स्थान पर रक्खा रहता है। इस रक्खे हुए पत्थर पर पैर रखकर हर परिक्रमा में वधू आगे बढ़ती है पीछे-पीछे वर।

❀ शिलारोहण ❀

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वँ स्थिरा भव ॥
अभि तिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः ॥

परिक्रमा के समय निम्न मन्त्र बोले—

ॐ तुभ्यमग्ने पर्यवहन्त्सूर्यां वहतुना सह ।
पुनः पतिभ्यो जायां दाग्ने प्रजया सह ॥

शिलारोहण, लाजाहोम एवं प्रदक्षिणा प्रथम चार परिक्रमाओं में मुख्य हैं। शेष तीन परिक्रमाओं में फिर लाजा होम नहीं होता।

प्रथम तीन परिक्रमाओं में वधू अपने निश्चय की पुष्टि के लिए घर से आगे रहती है। शेष परिक्रमाओं में वर, वधू को स्वीकार करने की पुष्टि के लिए आगे रहता हैं।

चतुर्थ परिक्रमा के समय मन्त्रोच्चारण नहीं होता। तूष्णी भाव से अर्थात् शान्त भाव से चतुर्थ परिक्रमा पूर्ण करें, और इसके पूर्ण होने पर वधू का भाई अपनी बहन के हाथों में शेष सभी लाजा सौंप दे और वधू निम्न मन्त्र बोलते हुये उनका हवन कर दे—

ॐ भगाय स्वाहा ॥ इदं भगाय इदं न मम ॥

लोकाचारानुसार सात परिक्रमायें कराई जाती हैं। इसलिये पूर्वोक्त चार परिक्रमाओं के बाद में तीन और परिक्रमायें वर को आगे और वधू को पीछे रखकर करा लेना चाहिये।

❋ सप्तपदी ❋

सात कदम वर-वधू साथ-साथ कदम मिलाकर चलते हैं। इसे सप्तपदी कहते हैं। अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दोनों को साथ-साथ कदम मिलाकर चलना है। इसका शुभारम्भ विवाह के समय सात कदम साथ-साथ चल कर किया जाता है।

प्रत्येक कदम के लिये एक-एक मन्त्र है। उन्हें बोलते हुये यह कदम उठाये जाते हैं। पहले दाहिना बढ़ाया जाता है और फिर बायाँ। वेदों में उत्तर पूर्व की ओर चलना कहा है। कन्या आगे रहती है और वर पीछे।

कहीं-कहीं ऐसा भी रिवाज है कि चावल की सात ढेरी रख देते हैं जिन पर पैर रखते हुए वर-वधू चलते हैं। इसका कारण गणना क्रम में भूल न होना भी हो सकता है।

❋ सप्तपदी के सात मन्त्र ❋

ॐ इषे एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥१॥

[अन्न की वृद्धि के लिए]

ॐ ऊर्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः॥२॥

[बल की वृद्धि के लिए]

ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ ३ ॥

[धन की वृद्धि के लिए]

ॐ मयोभवाय चतुष्पदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ ४ ॥

[सुखों की वृद्धि के लिए]

ॐ प्रजाभ्यः पंचपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ ५ ॥

[पशुओं की वृद्धि के लिए]

ॐ ऋतुभ्यः षट्पदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ ६ ॥

[ऋतु अनुसार व्यवहार करने लिए]

ॐ सखे सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ ७ ॥

[मित्रता के लिए]

❋ आसन परिवर्तन ❋

इसके पश्चात् वर और वधू का आसन परिवर्तन कर देना चाहिए। वधू को बायीं ओर तथा वर को दायीं ओर बैठाना चाहिए। इस समय निम्न मन्त्र बोला जाय।

ॐ इह गावः प्रजायध्वमिहाश्वा इह पूरुषाः ।
इहो सहस्रदक्षिणोऽपि पूषा निषीदतु ॥

ॐ इह गावः प्रजायध्वमिहाश्वा इह पूरुषा ।
इहो सहस्रदक्षिणोऽपि पूषा निषीदतु ॥

❋ ध्रुव-दर्शन ❋

ध्रुवतारा स्थिरता, अजर-अमरता का प्रतीक है। ध्रुव दर्शन से तात्पर्य यह है कि ध्रुव की तरह ही वर-वधू के सम्बन्ध स्थिर और प्रकाशनवान रहेंगे। उसमें एक दूसरे के प्रति निष्ठा, आत्मीय सम्बन्ध ध्रुव की तरह दृढ़ और स्थिर रहेंगे।

आचार्य निम्न मन्त्र पाठ करते हुये वर-वधू को उत्तर दिशा में इङ्गित करके ध्रुवतारा देखने को कहे और वे दोनों भली प्रकार ध्रुवतारे का दर्शन करें।

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वां पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि मह्यं त्वा ऽदात् ॥ बृहस्पतिर्मयापत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम् ॥

❋ सूर्य-दर्शन ❋

यदि दिन में विवाह सम्पन्न हुआ हो तो वर-वधू सूर्य के दर्शन करें और निम्न मन्त्र पढ़ा जाय।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं ॥ प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शरदः शतात् ॥

❋ शिर अथवा स्कन्ध-स्पर्श ❋

दाम्पत्य-जीवन की जिम्मेदारियाँ निभाने तथा जीवन में सभी अवसरों पर साथ सहयोग देने एवं एकता को बनाये रखने का धैर्य

बँधाने के तथा आश्वासन देने के लिए पति वधू के शिर या कन्धे पर हाथ रखता है ।

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।।

❋ सुमङ्गली ❋

वर अपनी अँगूठी में रोली लगाकर उसे निम्न मन्त्र बोलते हुये वधू के मस्तक पर लगावे, जिस तरह माँग भरने के लिये रोली सिन्दूर आदि लगाई जाती है । माँग भरने में अक्सर लड़कियाँ संकोच करती हैं । इसीलिये साड़ी के ऊपर या मस्तक पर लगाकर ही इस क्रिया को पूरा किया जा सकता है ।

सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत । सौभामयस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन ।। सुभगा स्त्री सावित्र्यास्तव सौभाग्यं भवतु ।।

।। स्विष्टकृत् होमः ।।

ॐ यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं य यद्वान्यूनमिहाकरं अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान् समर्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्नमम् ।।

।। पूर्णाहुति ।।

स्रुचि में सुपाड़ी या नारियल घृत समेत रख कर पूर्णाहुति दें ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणाव हाऽ इषमूर्जं ँ शतक्रतो, स्वाहा ।
ॐ सर्वं वे पूर्णं ँ स्वाहा ।

॥ वसोधारा ॥

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि सहस्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहाः ॥

॥ आरती ॥

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों को उच्चारण करते हुए आरती उतारे—

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति,
परमं प्रधानं पुरुषस्तथान्ये ।
विश्वोद्गते कारणमीश्वरं वा,
तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

॥ घृत अवघ्राण ॥

प्रणीता में इदन्नमम के साथ टपकाये हुए घृत को हथेलियों पर लगाकर अग्नि पर सेके और उसे सूँघे तथा मुख, नेत्र, कर्ण आदि पर लगावे । मन्त्र—

ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि
ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ।
ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि ।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनन्तन्म आपृण ।
ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ।
ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु
ॐ मेधां मे अश्विनौ देवा वाधतां पुष्कर स्त्रजौ ।

॥ भस्म धारण ॥

स्त्रुवा से यज्ञ भस्म लेकर अनामिका उङ्गली से निम्न मन्त्रों द्वारा ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहु मूल तथा हृदय पर लगावे ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ।
ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहु मूले ।
ॐ तन्नोअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ।

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥१॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे ॥२॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥३॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥४॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्णः स्यादिति श्रुतिः ।।५।।

।। साष्टाङ्ग नमस्कार ।।

तत्पश्चात् यज्ञ भगवान के प्रति घुटनों के बल झुक कर साष्टाङ्ग प्रणाम करें तथा निम्न मन्त्र बोलें—

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ।।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ।।
वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

।। शुभ कामना ।।

तत्पश्चात् समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ यज्ञ भगवान् से हाथ जोड़ कर शुभ कामना करे—

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः
गोब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ।।२।।
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ।।३।।
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् ।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ।।४।।

।। अभिसिंचनम् ।।

अभिषेक के समय सपरिवार यजमान के ऊपर आचार्य

निम्न मन्त्र से (रुद्र कलश) के जल से पंचपल्लव अथवा पुष्प द्वारा अभिषेक (जल सिंचन) करे—छिड़के—

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥६॥

ॐ विश्वानिदेव सवितुर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥ ७ ॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । सर्वारिष्टः सुशान्तिर्भवतु ॥

॥ प्रदक्षिणा ॥

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुडध्वजः ।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैऋत्यां मधुसूदनः ॥ १
पश्चिमे चैव गोविंदो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्रीपती रक्षे दैशान्यां हि महेश्वरः ॥ २
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु ।
अनुक्तमपि यत् स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ॥ ३
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥ ४
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे ॥ ५

विवाह के उद्देश्य और शिक्षा

विवाहो गद्यते लोके शक्ति शक्तिमतोरिव ।
एकीकरण मुभयोरात्मनो रिति च श्रुतिः ॥ १

दो आत्माओं का एकीकरण विवाह है यह श्रुति का वचन है। इन दो पति-पत्नी की आत्माओं की एकता शक्ति और शक्तिमान के एकीकरण की भाँति है।

द्विकस्य धीन्द्रियहृदां द्वयोः प्राण शरीर योः ।
उभयो रात्म नौ श्चैष प्रेम व्रत समन्वयः ।। २
कृत पति पत्नीत्वेन लोके गौरीशयोरिव ।
प्रेमादर्शो विवाहः स्याज्जीवने सुखदः स्मृतः ।। ३

दो शरीर, दो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं के समन्वय को कर अगाध प्रेम के व्रत को पालन करने वाले दम्पति, उमा महेश्वर के प्रेमादर्श को धारण करते हैं, यही विवाह का स्वरूप है।

वासना मोह संवेगे रूपसौन्दर्य वैकृतः ।
उपयोगस्तु वैशद्य प्रेम्णः करोति धूमिलम् ।। ४
वासनायेन चात्मानं मत्वा विषय सेवनम् ।
पुण्य परिणयस्यास्य प्रयोगस्तमसावृतः ।। ५

वासना के मोहावेग में रूप सौन्दर्य का विकृत उपयोग करने से प्रेम की विशदता धूमिल होजाती है और वासनात्मक को ही आत्मा मानकर विषय का सेवन यह परिणय के पुण्य संस्कार का तामसिक उपयोग है।

आत्म संयम सन्मार्गे नारी पुरुषयोः शुभा ।
एसा सफलतैवास्य सार्थकता च पूर्णता ।। ६
दूषित वासना जन्य प्रेम्णा ह्युपभोगं सदा ।
विजेतुं तत्परौ स्याता माश्रित्येमात्मगुणान्वै ।। ७
सम्बलं साधनं शक्तिः साहाय्यं दृढ साहसः ।
शुभोत्साहः षडेतेज तयोः सन्ति सहायकाः ।। ८

आत्म-संयम के पुनीत पथ में नारी पुरुष की यही शुभ-सफलता सार्थकता एवं पूर्णता है कि प्राणिक वासना प्रेम और भोग के ऊपर विजय पाने के लिए दोनों (पति-पत्नी) संबल, साधन शक्ति, सहायता दृढ़ साहस, शुभ उत्साह इन छः सहायक साधनों के साथ सलग्न हों।

समुत्कर्ष विकासार्थं मन्योन्यस्य च द्वावपि ।
कल्याणानन्दयो स्यातां स्पर्धाशीलौ प्रसारणे ।। १०

दोनों एक दूसरे की सेवा करते हुए विकास उत्कर्ष, हित कल्याण और आनन्द के विस्तार के लिए स्पर्द्धाशील हों।

अन्योन्यं सेवितुं प्रेम्णा द्वयोर्धर्मः क्रमागतः ।
समानो ह्यधिकारस्तु दम्पत्योर्निश्चितः सदा ॥ १०

दम्पति के पारस्परिक समान अधिकार क्रमागत निश्चित हैं।

पितुर्गृहं परित्यज्य प्रविश्य पति वेश्म च ।
तदेव सा स्वकं मत्वा महात्यागं करोति वै ॥ ११
इति स्मृत्वा सुकर्त्तव्यं पुरुषस्य विशेषतः ।
पत्न्याः सुखाय स्वास्थ्याय रक्षायै कुशलाय च ॥ १२

पिता के घर को त्यागकर पति के घर में आकर उसे अपना ही समझती हुई पत्नी जो यह बहुत बड़ा त्याग करती है इसको स्मरण कर पति-वर्ग का विशिष्ट कर्म इस प्रकार कहा गया है कि उसके सुख, स्वास्थ्य, रक्षा, कुशलता एवं प्रसन्नता के लिए पति निश्चय ही आजीवन यत्नशील रहे ।

प्रसादाय सयत्नोऽसौ भवेदाजीवनं खलु ।
नम्राज्ञापालिका नारी श्रमशीला च सेविका ॥ १३
उदारोत्सर्ग युक्ता सा प्रेममूर्तिः स्वभावतः ।
भवत्यतो विकासाय तस्या यच्छेदवसरम् ॥ १४

नारी-जाति स्वभाव से ही नम्रा विनीता श्रमशीला सेवाभाव-युक्ता, उदारा उत्सर्गमयी होती है अतः उनके विकास के लिए सदैव अवसर प्रदान करे ।

स्वातन्त्र्येण गुणानान्तु भावनायास्तथैव च ।
आत्मनिर्भरतायाश्च विकासः साधनैः सह ॥ १५
जायते सोऽपि नारीणामवरुद्धश्च कुण्ठितः ।
परतन्त्रतया प्रायो वैवश्येन च बन्धनैः ॥ १६
ताभ्यो जीवन पर्यन्तं प्रदेया सुविधा शुभा ।
व्यवस्थां सुखदां कुर्वन्त्यागं चात्म सुखस्य च ॥ १७

सद्गुणों की स्वतन्त्रता, भावना एवं आत्म-निर्भरता का पूर्ण साधनों के साथ विकास होता है। किन्तु उसी प्रकार परतन्त्रता, विवशता तथा बन्धन से सद्गुणों का विकास कुण्ठित और अवरुद्ध हो जाता है।

ऋणमुक्तः स्वजायायाः पतिर्भवति नान्यथा ।
नारी साक्षाद् गृहे लक्ष्मीस्तत्प्रसादो ह्यपेक्षते ।। १८
अपराधेऽपि पत्न्यास्तु ताडनोत्पीडने ध्रुवम् ।
दानवत्वं नरस्यैव निन्दनीयमसंशयम् ।। १९
तामुदारतया प्रेम्णात्तथा स्नेहेन प्रेरयेत् ।
त्यक्तुमवगुणानस्वीया नभ्यासेन शनैः शनैः ।। २०

अतः जब तक वह (पति) जीवन पर्यंत पत्नी को सुखप्रद व्यवस्था और बहुत सुख प्रदान नहीं करता तब तक अपनी पत्नी के ऋण से मुक्त नहीं होता है। पत्नी को उसके द्वारा अपराधित होने पर उसे प्रताड़ित एवं उत्पीड़ित करना निन्दनीय घोर दानवता है। उसको उदारता प्रेम और स्नेहपूर्वक अवगुणों को धीरे-धीरे अभ्यास द्वारा त्यागने के लिये प्रेरित करे।

बुध्वात्मनोहि दायित्वं पूर्णं च स्वपत्नीं प्रति ।
शिक्षा सुधार संयुक्तां व्यवस्थां कारयेत्पतिः ।। २१
आनृण्यार्थं न यो यत्नमात्मोत्सर्गेण स नरः ।
कृतघ्नः कुरुते पत्न्या पशु तुल्यो गण्यते ।। २२

जो व्यक्ति अपनी पत्नी के आत्मोत्सर्ग से ऋण मुक्त होने का प्रयत्न नहीं करता वह कृतघ्न नरपशु है।

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान्सेवामयस्तथा ।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत् ।। २३
व्यक्तित्वमद्वितीयञ्च निर्देशः संस्कृते रयम् ।
अस्माकं भारतीयानां पावनः कथितो बुधैः ।। २४

दाम्पत्य जीवन का उद्देश्य महान सेवक की भाँति, समाज देश और विश्व के लिये दिव्य आत्मा तथा अद्वितीय व्यक्तित्व को प्र[illegible] करना है। यही हमारी संस्कृति का पुण्य निर्देश बुद्धिमानों ने बतलाया

मुद्रक—जगदीश प्रसाद भरतिया, बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा

राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के उपरान्त हमें अपने भाग्य को बनाने बिगाड़ने का अधिकार मिला है। उज्ज्वल भविष्य की अभिनव रचना के लिए प्रत्येक देश-भक्त भारतीय को बहुत कुछ करना होगा।

देश में भावनात्मक परिवर्तन लाना आवश्यक है। तभी हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनैतिक समस्याओं का हल निकलेगा। यह परिवर्तन धार्मिक आधार पर ही चिरस्थायी रूप से शान्तिपूर्वक हो सकता है। अस्तु **'युग-निर्माण योजना'** नाम से एक व्यापक अभियान आरम्भ किया गया, जिसके अन्तर्गत शतसूत्री कार्य-क्रम बनाया गया है। इसमें लाखों व्यक्ति अपनी स्थिति के अनुरूप भाग ले रहे हैं।

इस ट्रैक्ट माला का प्रकाशन उसी आन्दोलन का एक अंग है। हर मास ऐसे पाँच ट्रैक्ट प्रकाशित होते हैं। आप इन्हें पढ़ेंगे और दूसरों को पढ़ने देंगे तो 'नव-निर्माण' आन्दोलन को सफल बनाने में महत्व-पूर्ण योग देंगे। यदि यह ट्रैक्ट आपको पसन्द आया तो ऐसे ही अन्य ट्रैक्ट प्राप्त करने एवं अन्य गति-विधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए युग-निर्माण योजना, मथुरा के पते पर पत्र लिखिये।

प्रकाशक—**श्रीराम शर्मा आचार्य,**

युग-निर्माण योजना, मथुरा।

मूल्य—२० नये पैसे

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्द्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।